Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPlL7kEO0ZMdDcHg

# कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

## अध्याय 16

# ममता - जयशंकर प्रसाद

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**प्रश्न 1. कहानी की केन्द्रीय पात्र ममता कौन थी –**

(अ) रोहतास-दुर्गपति की दुहिता

(ब) शेरशाह के मंत्री की पुत्री

(स) रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री की दुहिता

(द) हुमायूँ की दुहिता

उत्तर: (स)

**प्रश्न 2. चूड़ामणि द्वारा स्वर्णथाल उपहार में प्रस्तुत करने पर ममता ने कहा**

(अ) विपदा के समय यह काम आएगा।

(ब) इतना सोना पाकर मैं धन्य हो गई।

(स) तो क्या आपने मलेच्छ को उत्कोच स्वीकार कर लिया?

(द) इस स्वर्ण को रखने के लिए मेरे पास स्थान नहीं है।

उत्तर: (स)

**अति लघूत्तरात्मक प्रश्न**

**प्रश्न 1. शेरशाह ने किस युद्ध में हुमायूँ को परास्त किया था?**

उत्तर: शेरशाह ने चौसा युद्ध में हुमायूँ को परास्त किया था।

**प्रश्न 2. किस बादशाह ने ममता की झोपड़ी के स्थान पर अष्टकोण मंदिर बनवाया?**

उत्तर: बादशाह अकबर ने ममता की झोपड़ी के स्थान पर अष्टकोण मंदिर बनवाया।

**प्रश्न 3. किसने कहा-'हे भगवान! तबके लिए! विपदा के लिए! इतना आयोजन!'**

उत्तर: यह सब बातें ममता ने कही हैं।

**लघूत्तरात्मक प्रश्न**

**प्रश्न 1. ममता ने स्वर्ण-मुद्राओं का उपहार लेने से मना क्यों कर दिया?**

उत्तर: ममता ने अपने पिता चूड़ामणि से स्वर्ण-मुद्राओं का उपहार लेने से मना कर दिया क्योंकि यह धन उसके पिता ने शेरशाह से उत्कोच के रूप में लिया था। ममता ब्राह्मण जाति की थी। जो त्यागी और संतोषी होते हैं। ममता को विश्वास था कि धरती पर रहने वाला कोई न कोई उसको दो मुट्ठी अन्न दे देगा। अत: उसको इतने अधिक धन की जरूरत नहीं थी।

**प्रश्न 2. हुमायूँ कब और क्यों ममता की झोपड़ी में आश्रय के लिए आया था?**

उत्तर: हुमायूं चैसा के युद्ध में शेरशाह सूरी से परास्त हो गया। शेरशाह के सैनिक उसे खोज रहे थे। वह रास्ता भटककर अपने सैनिकों से अलग हो गया था। वह बहुत अधिक थक गया था। प्यास के मारे उसका गला सूख गया था और वह बिल्कुल भी चल नहीं सकता था। इसलिए वह ममता की झोंपड़ी में आश्रय लेने के लिए आया।

**प्रश्न 3. इस कहानी में भारतीय संस्कृति के किन-किन मूल्यों को उभारा गया है?**

उत्तर: इस कहानी में ममता के माध्यम से भारतीय संस्कृति के निम्नलिखित मूल्यों को उभारा गया है-

1. उत्कोच/रिश्वत न लेना।
2. शरणागत की रक्षा करना।
3. विपदाग्रस्त व्यक्ति को सहायता देना।
4. जाति-धर्म पर विचार किए बिना मानवीय धर्म निभाना।
5. त्याग, निर्लोभ, सहिष्णुता आदि गुणों को अपनाना।
6. दीनों पर दया दिखाना।

**प्रश्न 4. शेरशाह ने किस प्रकार रोहतास-दुर्ग पर कब्जा किया?**

उत्तर: शेरशाह ने छलपूर्वक रोहतास दुर्ग पर कब्जा किया। उसने मंत्री चूड़ामणि को उत्कोच के रूप में स्वर्ण-मुद्राएँ दीं। फिर उसने अपने सैनिकों को डोली में छिपाकर महिलाओं के रूप में दुर्ग में भेजा। जब मंत्री ने उनका पर्दा खुलवाने के लिए कहा तो उसकी हत्या कर दी। इस प्रकार दुर्ग तथा राजा-रानी को उसने अपने अधिकार में ले लिया।

**निबन्धात्मक प्रश्न**

**प्रश्न 1. 'ममता' के माध्यम से नारी के त्याग एवं आदर्शों पर एक लेख लिखिए।**

उत्तर: 'ममता' कहानी की मुख्य पात्र है। वह एक आदर्श महिला है। उसके चरित्र में भारतीय स्त्रियों के अनेक गुण पाये जाते हैं। ममता के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करने के उसके द्वारा कहानीकार भारतीय नारी के त्याग तथा आदर्शों को प्रकट करना चाहता है।

भारतीय नारी संतोषी होती है। उसकी आवश्यकताएँ अल्प होती हैं। वह किसी से कोई अनुचित उपहार स्वीकार नहीं करती। वह त्यागी होती है तथा दूसरों के हितार्थ अपनी धन-सम्पत्ति तथा सुख-सुविधाओं को त्यागने में पीछे नहीं रहती। उसमें अतिथि सत्कार की भावना होती है। वह घर आए अतिथि का सत्कार करने में कभी पीछे नहीं हटती। अतिथि उसके लिए देवता होता है। वह अपने पड़ोसियों के साथ मेल-जोल रखती है तथा उनके सुख-दुख में सदा हाथ बटाती है। उसमें पक्षपात की भावना नहीं होती। जाति-धर्म की ओर ध्यान न देकर वह पीड़ितों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहती है। | इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय नारी में मानवता के उच्च आदर्श पाए जाते हैं। ये आदर्श कहानी की नायिका ममता के चरित्र में जड़े हुए लगते हैं।

**प्रश्न 2. मुगलकालीन भारतीय नारी की स्थिति का वर्णन कीजिए तथा आज इस स्थिति में सुधार पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर: मुगलकाली में भारतीय नारी की स्थिति दयनीय थी। मुगल शासक भारतीय नारी को केवल भोगने की वस्तु समझते थे। मुगल विदेशी तो थे ही विजातीय भी थे। उनका धर्म तथा परम्पराएँ भिन्न थीं । मुगलों के भारत में आने के बाद भारतीय नारी को अपने धर्म, मान्यताओं तथा रीति-रिवाजों को सुरक्षित रखने की चिन्ता थी। इस काल में नारी के स्वातन्त्र्य को सर्वाधिक आघात पहुँचा था। उनकी सुरक्षा की दृष्टि से उनके ही लोगों ने उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिए थे। उनको घर से बाहर जाने पर रोक थी। वे परपुरुषों से बातें नहीं कर सकती थीं। इस कारण पर्दा प्रथा प्रचलित हो गई थी। मुगलकालीन स्त्रियों को घर से बाहर जाकर पढ़ने-लिखने की भी छूट नहीं थी। अत: उनमें अशिक्षा का प्रवेश हो गया था तथा इस कारण अन्य अनेक कुरीतियाँ भी उनमें जन्म ले चुकी थीं। यह काल नारी के पतन का काल था।

मुगलों के शासन का अन्त होने पर भारत में अंग्रेजी राज्य आया। इसके साथ ही भारतीय नारी के जीवन

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

में भी परिवर्तन की शुरुआत हुई। कुछ उच्चवर्गीय महिलाओं में शिक्षा का प्रसार हुआ। समाज में कुरीतियों के विरुद्ध सांस्कृतिक आन्दोलन चले। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत की स्वतंत्रता का आंदोलन चला। उसमें महिलाएँ भी सम्मिलित हुईं। इससे उनमें पिछड़ापन , अशिक्षा आदि दोष दूर हुए। बालिकाओं को स्कूल-कालेजों में भेजा जाने लगा। पर्दा-प्रथा में कमी आई तथा महिलओं की उन्नति के एक नये युग की शुरुआत हुई। भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद नारी-उत्थान में तेजी आई है। अब भारतीय नारियाँ अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

## कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

## अध्याय 16

# ममता - जयशंकर प्रसाद

### लेखक परिचय

**जन्म - सन् 1889 ई. मृत्यु सन् 1937 ई.**

**बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। बचपन में ही पिता के निधन से पारिवारिक उत्तरदायित्व का बोझ इनके कंधों पर आ गया । मात्र आठवीं तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य का विशद ज्ञान प्राप्त किया।**

**प्रसाद की रचनाएँ भारत के गौरवमय इतिहास व संस्कृति से अनुप्राणित हैं कामायनी उनका सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है , जिसमें आनन्दवाद की नई संकल्पना समरसता का संदेश**

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

निहित है प्रेम, समर्पण, कर्त्तव्य एवं बलिदान की भावना से ओतप्रोत उनकी कहानियाँ पाठक को अभिभूत कर देती हैं।

**उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं** - झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक (काव्य), स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, धुवस्वामिनी, जन्मेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, अजातशत्रु, विशाख, एक घूँट, कामना, करुणालय, कल्याणी परिणय, अग्निमित्र, प्रायश्चित, सज्जन (नाटक) छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल (कहानी संग्रह) तथा कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास)।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित कहानी ममता अपने कर्तव्य पथ से मुँह न मोड़ने वाली एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसने युद्ध में हारे हुमायूँ को अपने घर में शरण देकर उसकी जान बचाई थी हुमायूँ उसका घर बनवा कर उपकार का ऋण चुकाना चाहती था। बरसों बाद अकबर के आदेश से एक अश्वारोही उस स्थान की सुध लेता है। ममता उस मुगल अश्वारोही को वह स्थान सौपकर देह-त्याग अनंत यात्रा पर चली जाती है। वहाँ एक अष्टकोण आकर्षक मंदिर बनाया गया जिसके शिलालेख पर लिखा गया-"सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनाया।" मगर ममता का कहीं नाम नहीं था।

## ममता

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी । उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना , मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए , वह सुख के कण्टक-शयन में

विकल थी। वह रोहतास-दुर्गपति के मन्त्री चूडामणि की अकेली दुहिता थी , फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था, परन्तु वह विधवा थी-हिन्दू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है-तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था? चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया शोण के प्रवाह में उसके कल-नाद में अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी। पिता का आना न जान सकी चूड़ामणि व्यथित हो उठे। स्नेह-पालिता पुत्री के लिए क्या करें, यह स्थिर न कर सकते थे लौटकर बाहर चले गये ऐसा प्रायः होता पर आज मन्त्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी। पैर सीधे न पड़ते थे।

एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये। उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिये हुए खड़े थे ; कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूम कर देखा। मन्त्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया अनुचर थाल रखकर चले गये।

ममता ने पूछा- "यह क्या है , पिताजी?"

"तेरे लिये बेटी! उपहार है।" -कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली सन्ध्या में विकीर्ण होने लगा। ममता चौंक उठी "इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया?"

"चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है!"

"तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?" "इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त-वंश का अन्त समीप है , बेटी!

किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस दिन मन्त्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी!" "हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस! पिताजी, क्या भीख न मिलेगी ?क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायेगा, जो ब्राह्मण को दो मुठ्ठी अन्न दे सके?यह असम्भव है। फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हैं-इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

"मूर्ख है - कहकर चूड़ामणि चले गए।

दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था , ब्राह्मण-मन्त्री चूडामणि का हृदय धक-धक करने लगा। वह अपने को रोक न सका। उसने जाकर रोहिताश्व दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों ने कहा

"यह महिलाओं का अपमान करना है।"

बात बढ़ गई। तलवारें खिंची , ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा-रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े , निकल गई ममता। डोली में भरे हुए पठान-सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली।

काशी के उत्तर धर्मचक्र विहार , मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। भग्न चूड़ा , तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर , ईंटों की ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे , उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी "अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते...." पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी। स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा। परन्तु उस व्यक्ति ने कहा-"माता! मुझे आश्रय चाहिए।" "तुम कौन हो?"-स्त्री ने पूछा। "मैं मुगल हूँ। चौसा-युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ। इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ

"क्या शेरशाह से?"-स्त्री ने अपने ओठ काट लिए। "हाँ, माता!"

"परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो , वही भीषण रक्त की प्यास , वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब, तुम्हारे मुख पर भी है! सैनिक! मेरी कुटी में स्थान नहीं। जाओ , कहीं दूसरा आश्रय खोज लो।"

"गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है-इतना थका हुआ हूँ-इतना!"

कहते-कहते वह व्यक्ति धम-से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा। स्त्री ने सोचा , यह विपत्ति कहाँ से आई! उसने जल दिया , मुगल के प्राणों की रक्षा हुई। वह सोचने लगी-"ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं-मेरे पिता का वध करने वाले आततायी!" घृणा से उसका मन विरक्त हो गया। स्वस्थ होकर मुगल ने कहा-"माता! तो फिर मैं चला जाऊँ ?" स्त्री विचार कर

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

रही थी-"मैं ब्राह्मणी हूँ , मुझे तो अपने धर्म-अतिथिदेव की उपासना -का पालन करना चाहिए। नहीं-नहीं ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं .... कर्तव्य करना है। तब?" मुगल अपनी तलवार टेककर खड़ा हुआ। ममता ने कहा- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो, ठहरो।"

"छल! नहीं, तब नहीं-स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।"

ममता ने मन में कहा- "यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोपड़ी न; जो चाहे ले-ले, मुझे तो अपना कर्तव्य करना पड़ेगा।" वह बाहर चली आई और मुगल से बोली- "जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो , मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ सब अपना धर्म छोड़ दें ,तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?" मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा , उसने मन-ही-मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गई। भीतर, थके पथिक ने झोपड़ी में विश्राम किया।

प्रभात में खंडहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं। वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी।

अब उस झोपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा- 'मिरजा! मैं यहाँ हूँ।"

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा-"वह स्त्री कहाँ हैं ? उसे खोज निकालो।" ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गई। दिन-

भर उसमें से न निकली। सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है-"मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना , क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था यह स्थान भूलना मत।" - इसके बाद वे चले गए।

चौसा के मुगल-पठान-युद्ध को बहुत दिन बीत गये ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है। वह अपनी झोपड़ी में एक दिन पड़ी थी। शीतकाल का प्रभात था उसका जीर्ण-कंकाल खाँसी से गूँज रहा था। ममता की सेवा के लिये गाँव की दो-तीन स्त्रियों उसे घेर कर बैठी थीं , क्योंकि वह आजीवन सबके सुख दुःख की समभागिनी रही।

ममता ने जल पीना चाहा , एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया। सहसा एक अश्वारोही उसी झोपड़ी के द्वार पर दिखाई पड़ा। वह अपनी धुन में कहने लगा-"मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है , वह तो इसी जगह का होना चाहिये। वह बुढिया मर गई होगी , अब किससे पूछ कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ?यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई!

ममता ने अपने विकल कानों से सुना। उसने पास की स्त्री से कहा- "उसे बुलाओ।"

अश्वारोही पास आया। ममता ने रुक-रुककर कहा-"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था, या साधारण मुगल पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था! भगवान ने सुन

लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल , मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ!"

वह अश्वारोही अवाक खड़ा था। बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये।

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना; और उस पर शिलालेख लगाया गया "सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनाया।"
पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJIUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg